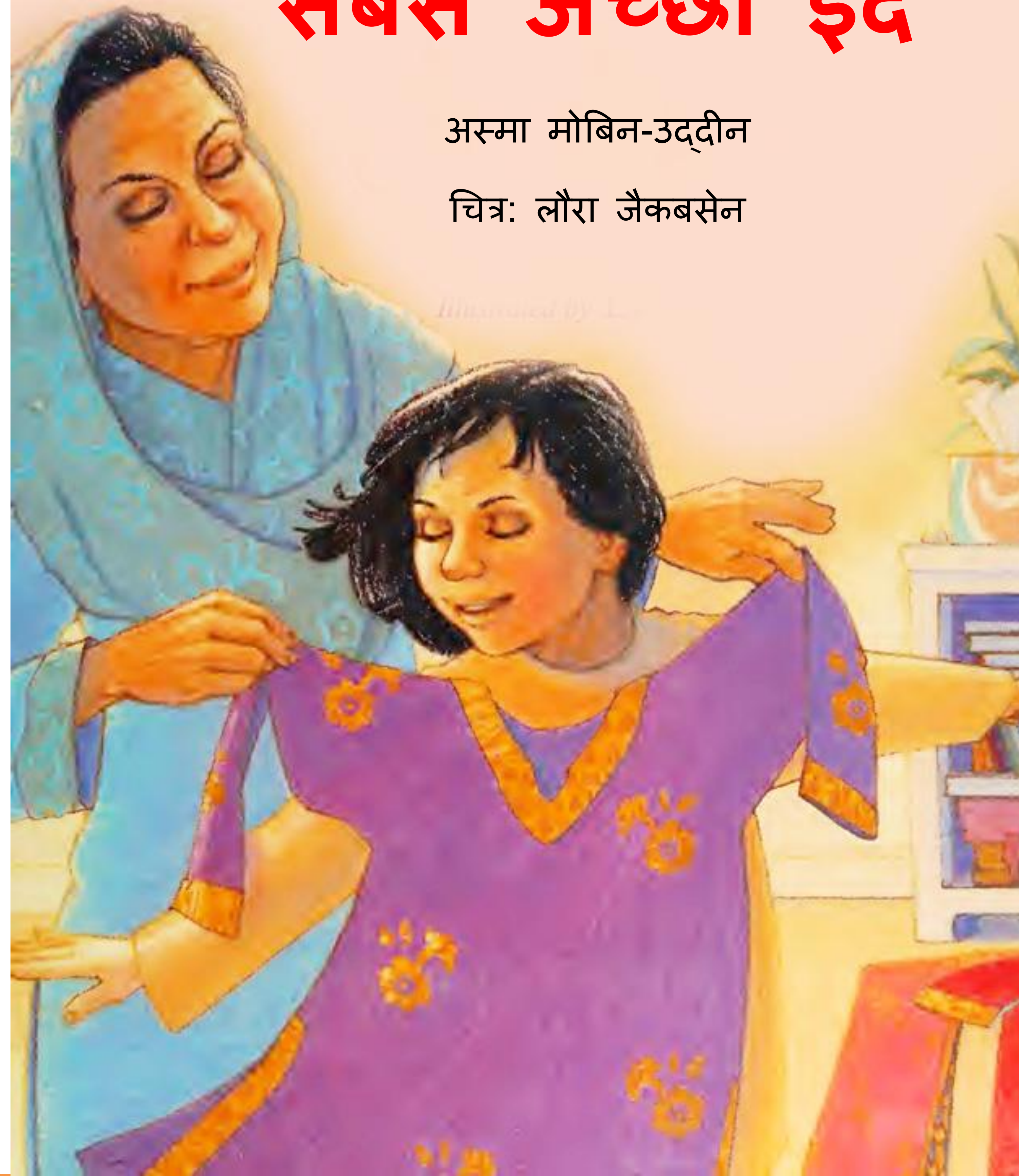
सबसे अच्छी ईद

अस्मा मोबिन-उद्दीन

चित्र: लौरा जैकबसेन



ईद आई है और अब मुस्लिम साल की सबसे बड़ी छुट्टी है. इसलिए अनीसा को खुश होना चाहिए. लेकिन उसके माता-पिता हज यात्रा के लिए सऊदी अरब में उससे हजारों मील दूर हैं. उसे खुश करने के लिए, उसकी नानी उसे पाकिस्तानी खूबसूरत कपड़ों के साथ-साथ मैचिंग चूड़ियाँ और जूते भी देती हैं. वो अनीसा का पसंदीदा कोरमा भी बनाती है, जिसका आनंद वे प्रार्थना से लौटने पर लेंगे.

प्रार्थना कक्ष में, अनीसा दो बहनों से मिलती है, जो फटे-पुराने कपड़े पहने हुए हैं. अनीसा को पता चलता है कि वे लड़कियां शरणार्थी हैं. वे अपने पिता के साथ युद्धग्रस्त देश छोड़कर अमेरिका आई हैं.

अनीसा लड़कियों के बारे में सोचना बंद नहीं कर पाती है. वो सोचती है कि उनकी ईद कैसी होगी. तभी अनीसा एक योजना बनाती है ताकि वे लड़कियां भी ईद का आनंद ले सकें.

सबसे अच्छी ईद

अस्मा मोबिन-उद्दीन, चित्र: लौरा जैकबसेन





अनीसा अपने बिस्तर में उठकर बैठी. वो खिड़की से बाहर देख रही थी. उसके माता-पिता हज यात्रा पर गए थे और उसे उनकी बहुत याद आ रही थी. सऊदी अरब उसके अमरीकी घर से बहुत दूर था.

उसने पिछले साल की ईद की छुट्टी के बारे में सोचा. जब उसने नई सलवार कमीज पहनी थी. उसके हाथों पर नारंगी रंग की मेंहदी के डिजाइन देखकर, डैडी ने कहा था कि वो बिल्कुल एक राजकुमारी जैसी दिख रही थी. मम्मी ने उसे नाश्ते से पहले कैंडी खाने दी थी. वे सभी एक साथ ईद की नमाज में गए और फिर पूरे दिन दोस्तों से मिले. पर आज घर में एकदम सन्नाटा था.

तभी अनीसा की नानी कमरे में आईं.



अनीसा, ईद मुबारक! नानी ने अपनी नातिन को पुच्ची दी और उसे गले लगाया. "प्रार्थना के लिए तैयार होने का समय है." अनीसा ने भी नानी को गले लगाया और फिर वापस बिस्तर में लेट गई.

"तुम उदास क्यों हो, प्रिय?" नानी ने धीरे से अनीसा की आँखों के सामने के बाल हटाते हुए कहा, "क्या तुम्हें मम्मी-डैडी की याद आ रही है?" अनीसा ने सिर हिलाया. उसे लगा कहीं वो रो न पड़े. "मुझे पता है कि माता-पिता के बिना तुम्हारे लिए बहुत कठिन होगा," नानी ने कहा. "लेकिन आज के दिन इतनी उदास मत हो, आज हम एक साथ मस्ती करेंगे, तुम और मैं, क्यों ठीक है?"

अनीसा ने मुस्कुराने की कोशिश की. वो नहीं चाहती थी कि उसकी नानी को बुरा लगे. "ठीक है," अनीसा ने कहा. फिर नानी खड़ी हुईं और कोठरी में गईं.

"मेरे पास तुम्हारे लिए एक सरप्राइज है," नानी ने कोठरी की शेल्फ पर एक कंबल को उठाया और उसके नीचे से एक उपहार के डिब्बे को बाहर निकाला.





अनीसा ने बॉक्स पर लिपटा रिबन खोला. पाकिस्तान से आए ईद के खूबसूरत कपड़े देखकर उसकी आंखें चमक उठीं. कुर्ते को बाहर निकालते हुए, उसने अपनी उंगलियों से नरम, झिलमिलाते कपड़े और उसकी सोने की कढ़ाई और चमकदार सेक्विन को छुआ. जब नानी ने बैंगनी और सोने की चूड़ियाँ को खोला तो वो खनकने लगीं. हाथ से बने पाकिस्तानी जूते, टिशू पेपर में लिपटे अभी भी डिब्बे में ही पड़े थे.

"नानी मुझे ईद के नए कपड़े बहुत पसंद आए! आपको कैसे पता चला कि बैंगनी मेरा पसंदीदा रंग है? धन्यवाद!" अनीसा ने अपनी नानी को गले लगाया. "मैं अब उन्होंने पहनने के लिए और इंतजार नहीं कर सकती."

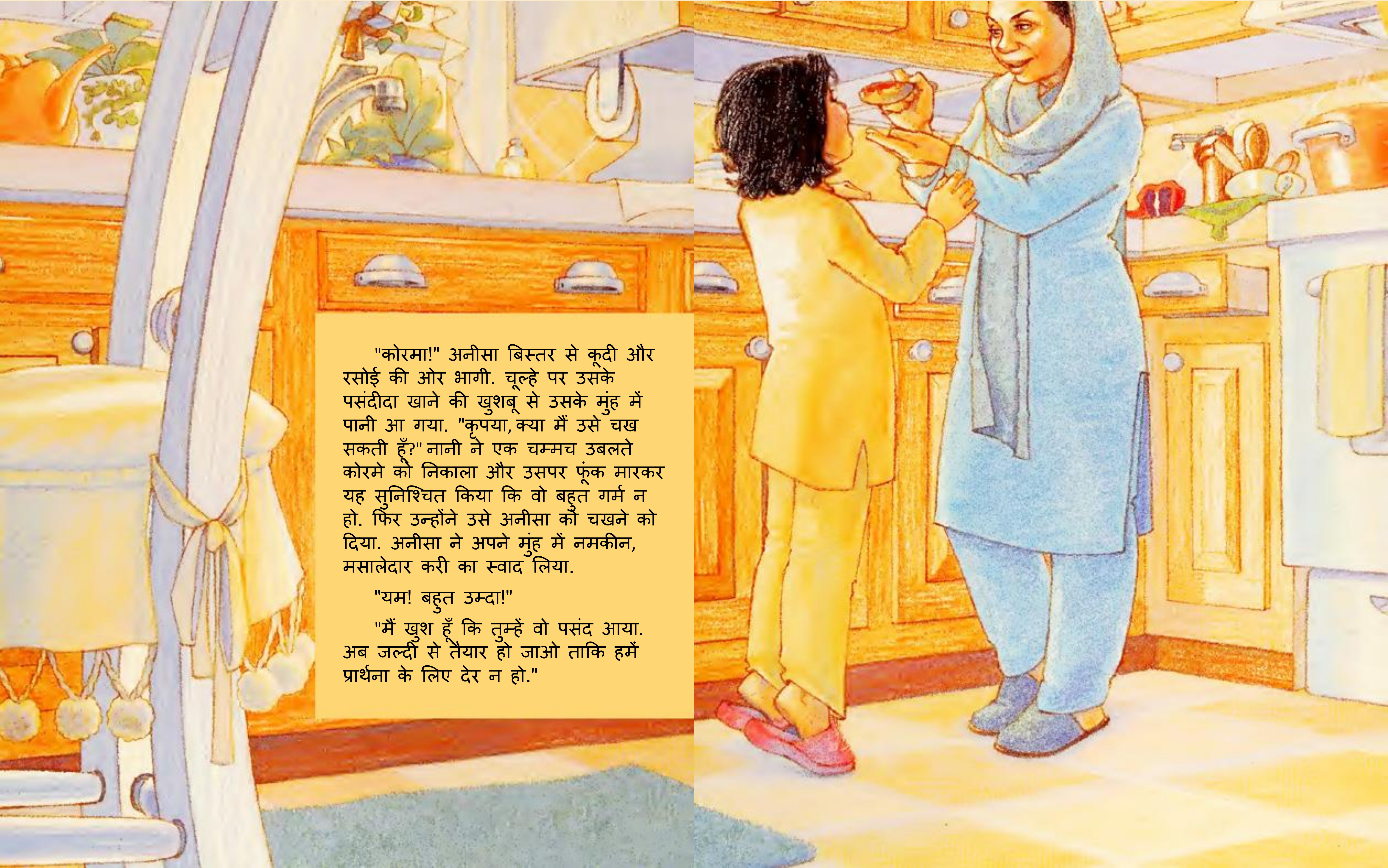
"अभी और बहुत कुछ है," नानी ने मुस्कुराते हुए कहा, और फिर उन्होंने एक चमकदार लाल रंग की सलवार-कमीज और एक रेशमी पीला घाघरा बॉक्स से बाहर निकाला. कपड़ों की हर जोड़ी के साथ मैचिंग चूड़ियां और जूते भी थे.

"देखो, तीन सेट कपड़े हैं, ईद के तीन दिनों के लिए. तुम आज सुबह प्रार्थना के लिए कौन सा पहनना चाहोगी?"

"बैंगनी वाला!"

नानी मुस्कुरा दीं. "वो तुम पर बहुत सुंदर लगेगा. जब तक तुम तैयार होगी, मैं उसे इस्त्री कर दूंगी. लेकिन पहले, मुझे कोरमा को ज़रा हिलाना होगा."





"कोरमा!" अनीसा बिस्तर से कूदी और रसोई की ओर भागी. चूल्हे पर उसके पसंदीदा खाने की खुशबू से उसके मुंह में पानी आ गया. "कृपया, क्या मैं उसे चख सकती हूँ?" नानी ने एक चम्मच उबलते कोरमे को निकाला और उसपर फूंक मारकर यह सुनिश्चित किया कि वो बहुत गर्म न हो. फिर उन्होंने उसे अनीसा को चखने को दिया. अनीसा ने अपने मुंह में नमकीन, मसालेदार करी का स्वाद लिया.

"यम! बहुत उम्दा!"

"मैं खुश हूँ कि तुम्हें वो पसंद आया. अब जल्दी से तैयार हो जाओ ताकि हमें प्रार्थना के लिए देर न हो."



प्रार्थना हॉल में इमाम ने हज यात्रा के बारे में उपदेश दिया. अनीसा के लिए उसपर ध्यान देना मुश्किल था क्योंकि वो लगातार अपने माता-पिता के बारे में सोच रही थी और वो चाहती थी कि वे उसके साथ हों.

प्रवचन समाप्त होने के बाद प्रार्थना कक्ष के महिला वर्ग में महिलाओं और बच्चों ने अपने-अपने आसनों को मोड़ा और एक-दूसरे को ईद की बधाई दी. अनीसा ने बहुत से लोगों को अपने गले लगाया! पिछली टेबल पर रखा नाश्ता जल्द ही ख़त्म हो गया!



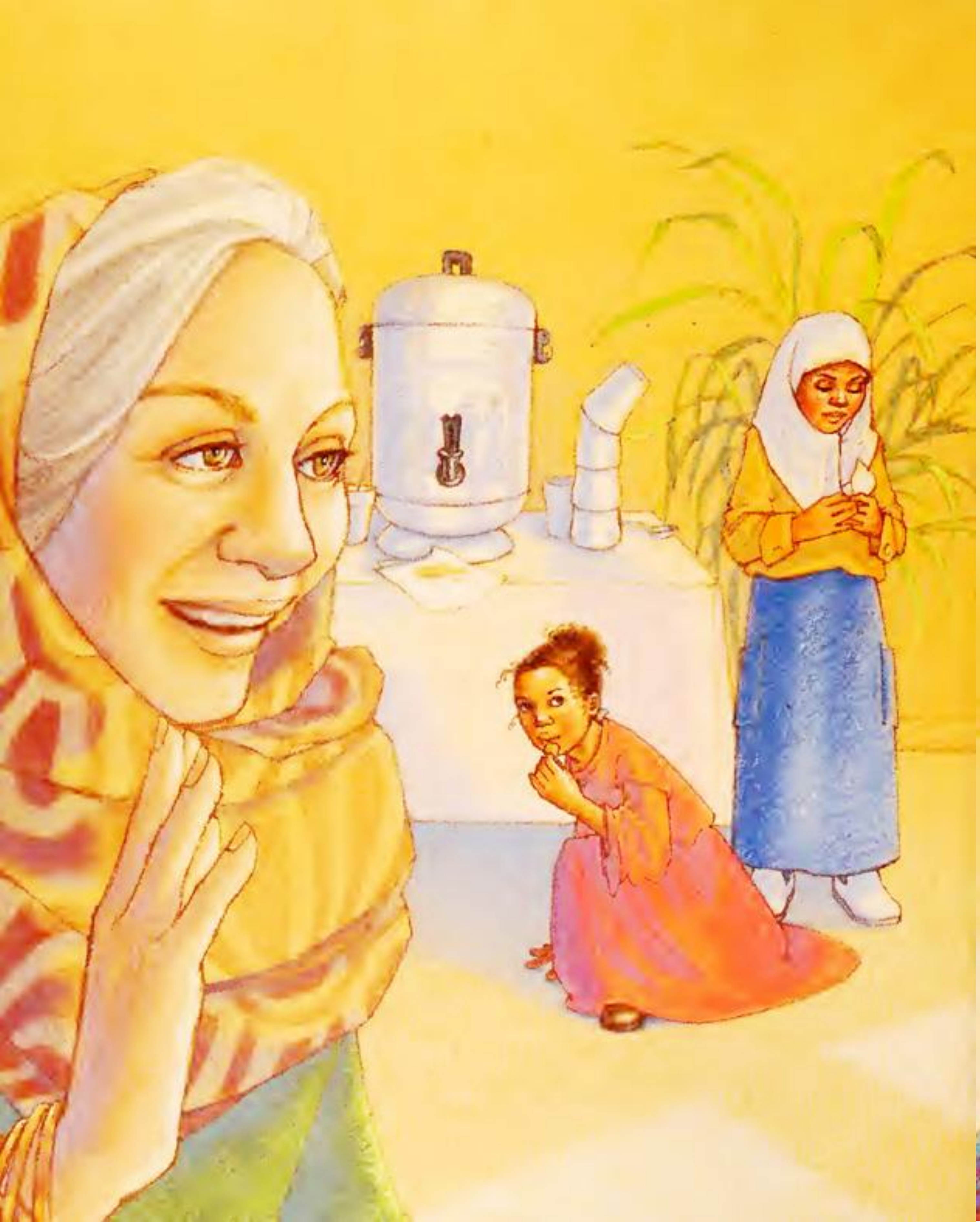
अनीसा ने दो युवा लड़कियों को अकेले खड़े देखा. वो अपने चारों ओर के उत्साह को देख रही थीं. बड़ी लड़की का हिजाब फटा हुआ था. छोटी लड़की की पोशाक फर्श पर लिथड़ रही थी. उसने अपनी बाहें मोड़कर रखीं थीं ताकि उसकी आस्तीन उसके हाथों पर फिसल कर न गिरे.

अनीसा उनके पास गई. "आप लोगों ने आज ईद के नए कपड़े क्यों नहीं पहने हैं?" उसने पूछा.

बड़ी लड़की शर्मा कर फर्श को घूरने लगी. यह देखकर कि उसकी बहन जवाब नहीं देने वाली थी, छोटी लड़की ने कहा, "इस ईद पर हमारे पास नए कपड़े नहीं हैं. हमें अपना सारा सामान छोड़कर भागना पड़ा क्योंकि दुश्मनों ने हमारे घर को जला डाला."

बड़ी लड़की अपनी बहन की ओर मुड़ी. "मरियम, हमें शुक्रगुजार होना चाहिए कि हम अब युद्ध से बहुत दूर हैं. हम अब सुरक्षित हैं और हम सब एक-साथ हैं. पापा कहते हैं कि हमें जो चाहिए वो भगवान हमें ज़रूर देंगे."

मरियम ने अनीसा से कहा, "काश पापा अब हमारे साथ होते. लेकिन जब से हम अमेरिका आए हैं, उन्हें हमेशा काम करना पड़ता है. उन्हें ईद वाले दिन भी काम करना पड़ता है! लेकिन बाद में वो ज़ैनेब और मेरे लिए कैंडी लाएंगी और फिर हम मिलकर दोपहर की नमाज़ के लिए मस्जिद जायेंगे."



इससे पहले कि अनीसा कुछ कहती, सेल्मा मौसी ने उसे अपने गले लगाया. "अनीसा, मेरी प्यारी बेटी, तुम्हें ईद मुबारक! माशा अल्लाह, तुम आज बहुत सुंदर लग रही हो, जैसा कि भगवान चाहते हैं. तुम आज अपनी नानी के साथ मुझसे मिलने ज़रूर आना, ठीक है?"

अनीसा ने अन्य मौसियों और दोस्तों ने भी गले लगाया और ईद की मुबारकबाद दी. जब आंटी बराक उसे गले लगा रही थीं तब अनीसा ने मरियम को फर्श से समोसे का एक टुकड़ा उठाते हुए देखा. लड़की ने पहले तेजी से इधर-उधर देखा. फिर उसने समोसे के टुकड़े को अपने मुंह में डाल लिया और फिर उसने अपनी उंगलियों को चाटा.



जब लोग प्रार्थना कक्ष से निकल रहे थे, तब अनीसा पीछे मुड़कर उन लड़कियों को देखती रही. अंत में, उसने नानी का हाथ छोड़ दिया और वापस उनके पास चली गई. उसे नहीं पता था कि वो उनसे क्या कहेगी. लेकिन वो फिर भी वो उनसे बात किए बिना नहीं जा सकती थी.

उसने झिझकते हुए उनसे पूछा, "क्या हम आपस में कभी साथ खेल सकते हैं." वो सुनकर मरियम का तुरन्त चेहरा खिल उठा. "ज़रूर" उसने एक चमकदार मुस्कान बिखेरते हुए कहा. पर ज़ैनाब ने फर्श को देखना जारी रखा.

"कहाँ ... तुम अब कहाँ रहती हो?" अनीसा ने पूछा.

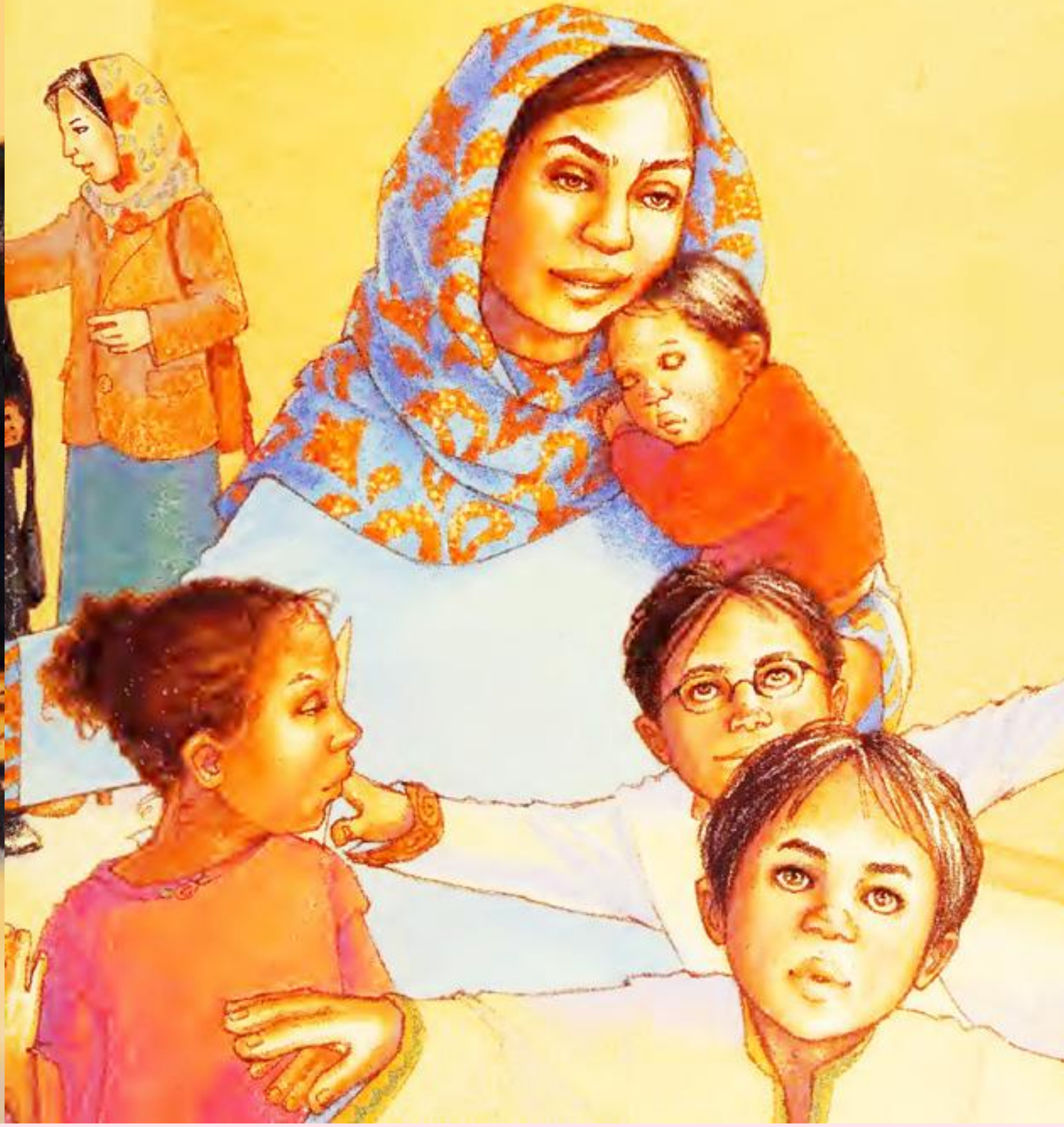
"मस्जिद के पास वाले अपार्टमेंट में," मरियम ने उत्तर दिया.



ज़ैनाब ने अनीसा को देखने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया. एक छोटी, शर्मीली मुस्कान उसके चेहरे को पार कर गई.

"फ्लैट 63 में."

फिर एक महिला ने अपने तीनों बच्चों और ज़ैनाब और मरियम को प्रार्थना कक्ष से बाहर निकाला.





उस दोपहर घर पर जब नानी रात का खाना पका रही थीं तब अनीसा ने उन्हें उन लड़कियों के बारे में बताया जिनसे वो आज मिली थी.

नानी उसकी बातें चुपचाप सुनती रहीं. "कभी-कभी जब युद्ध और अन्य आपदाओं के कारण लोगों को अपना घर छोड़ने को मज़बूर होना पड़ता है. अक्सर उन्हें अपना सब कुछ छोड़ना पड़ता है," नानी ने उसे बताया. "कई परिवार शरणार्थी के रूप में अमेरिका आते हैं. वो अपने बच्चों के रहने और उनकी परवरिश के लिए एक सुरक्षित, अच्छी जगह तलाशते हैं."

"क्या भगवान इन परिवारों की मदद करते हैं?"

"बेशक, भगवान सबकी मदद करते हैं," नानी खाने को हिला रही थीं. "लेकिन कभी-कभी उस तरह से नहीं जैसा हम सोचते हैं. वो बुरे समय में अच्छे लोगों को उनकी मदद करने के लिए भेजते हैं. इस बीच, उन परिवारों को कड़ी मेहनत करनी होती है और भरोसा करना होता है कि भगवान जल्द ही मदद भेजेंगे."

नानी ने रोटी को चैक करने के लिए ओवन का दरवाजा खोला. "क्या तुम्हें पैगंबर अब्राहम, उनकी पत्नी, हजर और उनके बच्चे, इस्माइल की कहानी याद है?"

अनीसा ने सिर हिलाया. मम्मी और डैडी ने उसे वो कहानी सुनाई थी और बताया था कि हज यात्रा के कई पाठ इसी कहानी पर आधारित हैं. पैगंबर अब्राहम के परिवार ने बहुत मुश्किल समय में भी भगवान पर भरोसा किया था, और भगवान ने हमेशा उनकी देखभाल की थी.

नानी और अनीसा ने ज़ैनाब और मरियम के परिवार के लिए प्रार्थना की. फिर अनीसा ने नानी को अपनी बनाई योजना के बारे में बताया.

बाद में दोपहर बाद पूरे शहर में मुस्लिम परिवार अस्र की नमाज अदा करने के लिए मस्जिद में गए.

"अनीसा, चुपचाप बैठो. कोई तुम्हारी बात ज़रूर सुन लेगा," नानी ने अपनी पोती से फुसफुसा कर कहा. वे मस्जिद के बगल में अपार्टमेंट की इमारत के बाहर झाड़ियों के पीछे छिपी हुई थीं. "देखो वे आ ही रहे हैं. अपना सर नीचे करो!"

झाड़ियों के बीच से, उन्होंने दो लड़कियों और एक आदमी को उनके दरवाजे के सामने बड़े करीने से सजाई गई टोकरियों के सामने रुकते देखा.

"यह क्या है?" आश्चर्य में, आदमी ने साथ में लगे कार्ड को पढ़ा. "मरियम, ज़ैनाब और उनके पापा को ईद की मुबारकबाद."

अनीसा को लगा जैसे वह उत्साह से फूट जाएगी. क्या उन्हें वे उपहार पसंद आएंगे? ज़ैनेब और मरियम ने टोकरियाँ खोलीं.

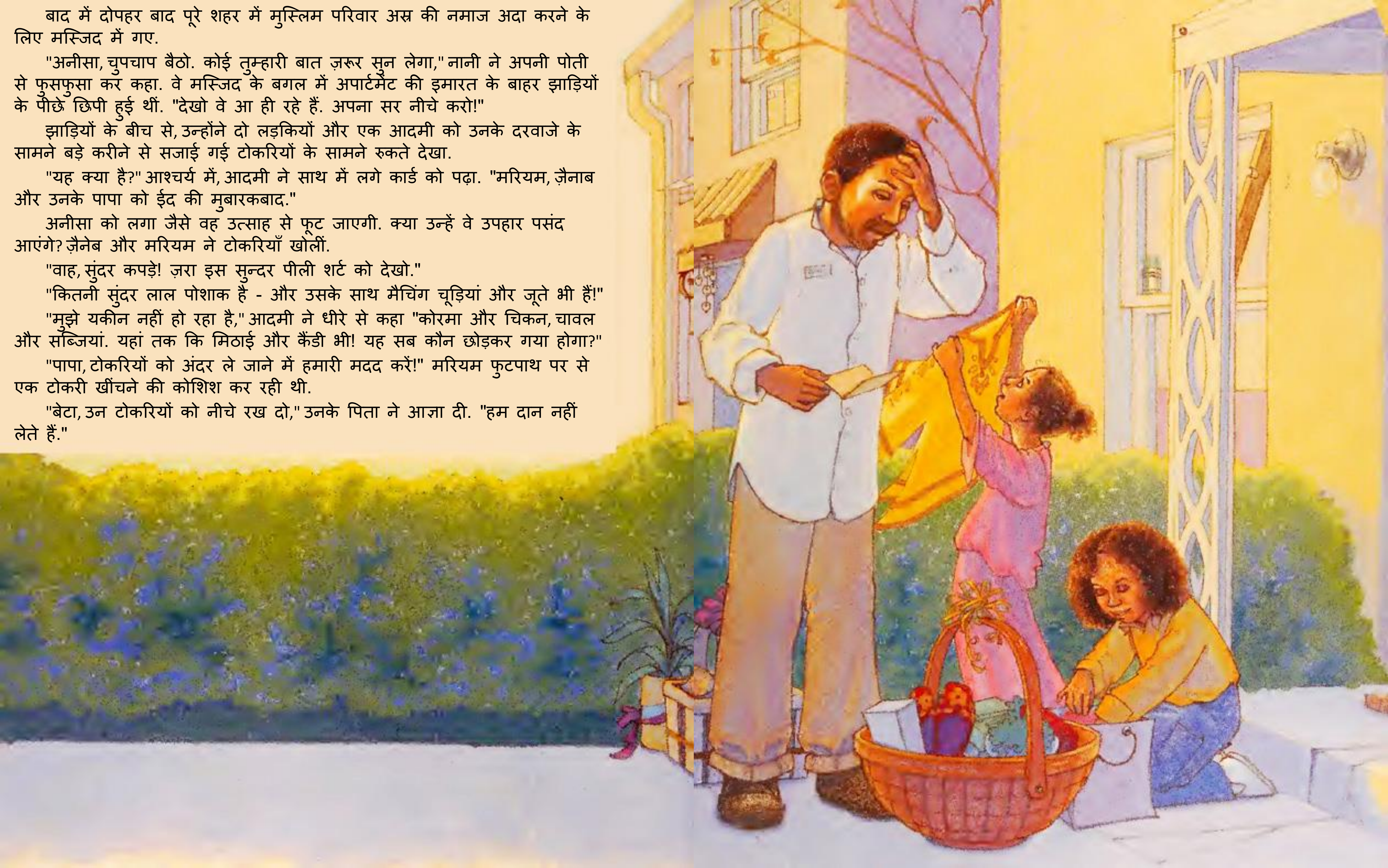
"वाह, सुंदर कपड़े! ज़रा इस सुन्दर पीली शर्ट को देखो."

"कितनी सुंदर लाल पोशाक है - और उसके साथ मैचिंग चूड़ियां और जूते भी हैं!"

"मुझे यकीन नहीं हो रहा है," आदमी ने धीरे से कहा "कोरमा और चिकन, चावल और सब्जियां. यहां तक कि मिठाई और कैंडी भी! यह सब कौन छोड़कर गया होगा?"

"पापा, टोकरियों को अंदर ले जाने में हमारी मदद करें!" मरियम फुटपाथ पर से एक टोकरी खींचने की कोशिश कर रही थी.

"बेटा, उन टोकरियों को नीचे रख दो," उनके पिता ने आज्ञा दी. "हम दान नहीं लेते हैं."



उनके पिता रुके, तब मरियम ने धीरे से पूछा, "लेकिन क्या मैं वो पीली ड्रेस रख सकती हूँ? मुझे पीला रंग बेहद पसंद है. और इन चमकदार चूड़ियों को भी?"

"नहीं, बेटा," उनके पिता ने फिर से कहा. "तुम जानती हो कि एक मुसलमान दूसरों से कभी भीख नहीं माँगता है."

"लेकिन पापा, हमने उनके लिए किसी से भीख नहीं मांगी," ज़ैनाब ने इशारा किया.

पर पापा नहीं माने. "मैं अपने परिवार का भरण-पोषण करूंगा. कुछ और लोग हैं जिन्हें इस भोजन और इन कपड़ों की हमसे कहीं ज्यादा जरूरत है. अब हम यहाँ से जायेंगे."

"क्या मैं यह कुकी अभी खा सकती हूँ?"

अनीसा मुश्किल से सांस ले पा रही थी. क्या होगा अगर उन्होंने वो उपहार स्वीकार नहीं किए? जैसे ही वो कुछ आगे झुकी, उसके नीचे वाली एक टहनी टूट गई.

"वो शोर क्या है?" झाड़ियों की ओर देखते हुए पिता ने पूछा. जैसे ही उनके छिपने की जगह के पास पास कुछ कदम पहुंचे, नानी और अनीसा ने छिपने की कोशिश की.



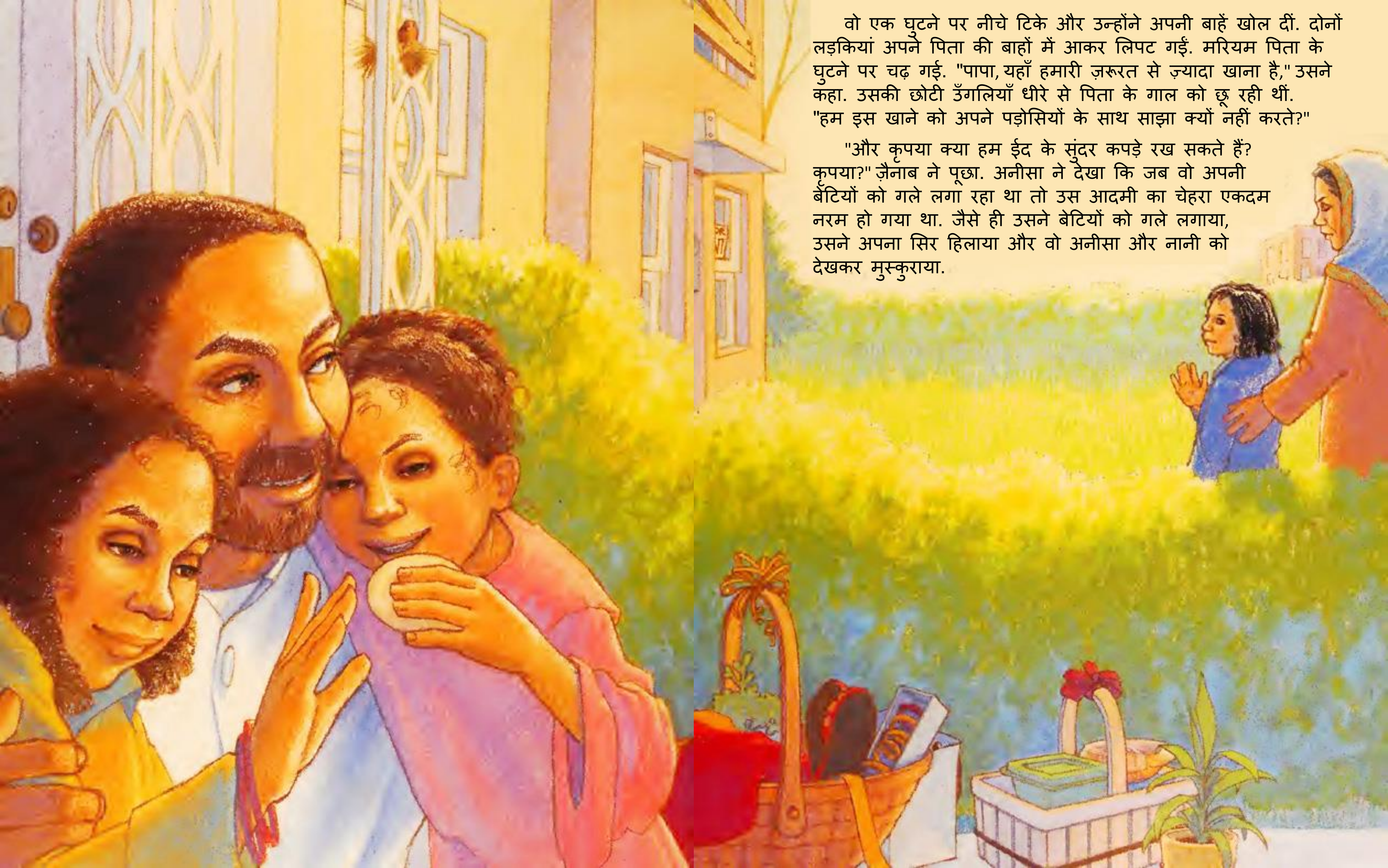


पत्तों के बीच से, अनीसा आदमी के दृढ़ चेहरे को देख सकती थी. उस चेहरे की मोटी भौहों के पीछे छिपी कोमल आँखें थीं. अनीसा को उस कोमलता को देखकर याद आया कि अक्सर वही झलक वो अपने पिता के चेहरे पर भी देखती थी.

अनीसा और वो आदमी बहुत देर तक एक-दूसरे को देखते रहे. फिर, अचानक, वो आदमी घूमा और अपनी बेटियों के पास वापस चला गया.

वो एक घुटने पर नीचे टिके और उन्होंने अपनी बाहें खोल दीं. दोनों लड़कियां अपने पिता की बाहों में आकर लिपट गईं. मरियम पिता के घुटने पर चढ़ गई. "पापा, यहाँ हमारी ज़रूरत से ज़्यादा खाना है," उसने कहा. उसकी छोटी उँगलियाँ धीरे से पिता के गाल को छू रही थीं. "हम इस खाने को अपने पड़ोसियों के साथ साझा क्यों नहीं करते?"

"और कृपया क्या हम ईद के सुंदर कपड़े रख सकते हैं? कृपया?" ज़ैनाब ने पूछा. अनीसा ने देखा कि जब वो अपनी बेटियों को गले लगा रहा था तो उस आदमी का चेहरा एकदम नरम हो गया था. जैसे ही उसने बेटियों को गले लगाया, उसने अपना सिर हिलाया और वो अनीसा और नानी को देखकर मुस्कुराया.

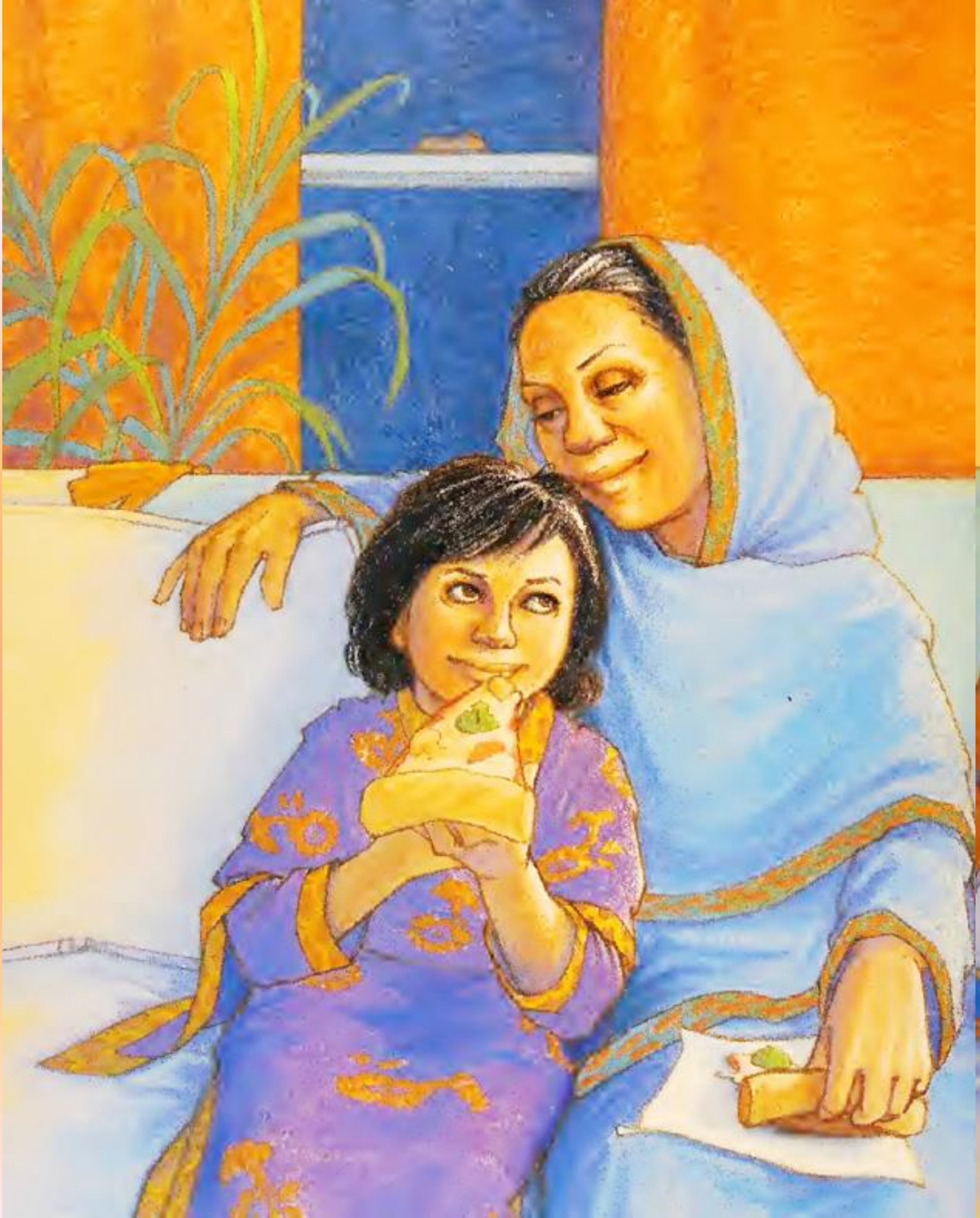


अनीसा और नानी के घर लौटने के बाद, नानी ने फोन उठाया और डायल किया. "हेलो, मैं डिलीवरी के ज़रिये एक पिज्जा ऑर्डर करना चाहती हूँ," उसने कहा. फोन काटने के बाद उसने सिर हिलाया.

"ईद पर पिज़्ज़ा का मज़ा, मेरी बच्ची! मैंने इस तरह की ईद कभी नहीं मनाई."

"मैंने भी नहीं," अनीसा ने कहा. "मैं इसके बारे में माँ और पिताजी को बताने का इंतजार नहीं कर सकती हूँ!"

बाद में शाम के वक्त जब अनीसा और नानी सोफे पर बैठकर पिज़्ज़ा खा रही थीं तो दोनों एक बात पर पूरी तरह सहमत थीं—वो अब तक की उनकी सबसे अच्छी ईद थी!





समाप्त